ग्रहणनिर्देश

ऋणनिर्देश

'' अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का शैल्पिक अध्ययन इस लघुशोध - प्रबंध को सफल बनाने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग प्रदान करनेवाले हित - चितकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना, मैं अपना परम - कर्तव्य मानता हूँ।

श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. श्री. क्षितिज यादवराव धुमाळ सरजी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। जिनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के सहारे मैं अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ता जा रहा हूँ। शोध - प्रबंध के विषय - चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक आपका मार्गदर्शन मुझे सफलता की राह दिखाता रहा है। आपके प्रति आभार प्रकट करना अर्थात 'कतरे ने समंदर की बात करने के बराबर हैं। मैं आपके आशिर्वाद की छाया में रहना ही पसंद करूंगा। दिल में यह चाह हमेशा रहेगी कि, आपका स्नेह मुझ पर हमेशा बना रहे।

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के प्राचार्य सुहास साळुंखेजी ने शोध - कार्य के दौरान मुझे मार्गदर्शन किया और यह कार्य सफलता के साथ पूरा करने की प्रेरणा दी, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। इसी महाविद्यालय के डॉ. बी. डी. सगरेजी तथा प्रा. जयवंत जाधवजी ने समय - समय पर मार्गदर्शन किया, इसलिए उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. एल. एन. कुंभार जी तथा उनके सभी कर्मचारियोंने इस शोध - कार्य के दौरान संदर्भ - ग्रंथ एवं पत्र - पत्रिकाएँ उपलब्ध करा दी, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। प्रशासकीय कर्मचारी श्री. कागवाडेजी ने समय - समय पर हर तरह की सूचनाएँ वितरत करके सहयोग दिया इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ. श्री. वाय. बी. धुमाळ सरजी ने मुझे समय - समय पर मार्गदर्शन करके तथा आवश्यक सुझाव देकर शोध - कार्य का मार्ग प्रशस्त कर दिया इसलिए मैं सदैव उनका आभारी रहूँगा। साथही गुरूमाता सौ. नयना धुमाळ, गुरूपत्नी सौ. रेखा धुमाळ, गुरूपुत्र चि. उत्कर्ष धुमाळ, गुरूभगिनी सौ. शर्वरी शिंदे आदि की मुझे सदैव प्रेरणा, प्रोत्साहन, सहयोग प्राप्त हुआ मैं इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम – कर्तव्य मानता हूँ।

वराडकर - बेलोसे महाविद्यालय के प्राचार्य श्री. शिवाजी पाटील जी का भी मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने शोध - कार्य के दौरान मेरी सहायता की। इसी महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक श्री. बी. पी. गुंजाळ जी का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने समय - समय पर मेरे शोध - कार्य के संबंध में मुझे मौलिक मार्गदर्शक करके प्रेरणा देने का कार्य किया है। वराडकर - बेलोसे महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक और कर्मचारी आदि के सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. अर्जुन चव्हाण तथा हिन्दी विभागाध्यक्षा डॉ. पद्मा पाटील का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय - समय पर शोध - कार्य के लिए दिशा - दिग्दर्शन किया।

इस शोध - कार्य के लिए मुझे निरंतर प्रोत्साहित करनेवाले मेरे बड़े भाई श्री. शंकर जाधव, भाभी सौ. वैशाली जाधव, मेरी श्रध्देय माताजी सौ. बाळाबाई जाधव और पिताजी श्री. राजाराम जाधव इनका मुझे विशेष प्रोत्साहन और स्नेह मिला, जिनके प्रेम और विश्वास के कारण ही मैं यहाँ तक पहुँच पाया हूँ, तथा इस

कार्य में सफलता प्राप्त कर सका। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना परमधर्म मानता हूँ। अतः मैं उनके आशिर्वाद की छाया में रहकर उन्हीं के बताये रास्ते पर चलना पसंद करूँगा।

इस शोध - कार्य को संपन्न बनाने में मेरा आर्थिक सहयोग देनेवाले मेरे दोस्त शंकर सुतार, लक्ष्मण जाधव, संजय पाटील आदि का मैं सदैव ऋणी रहूँगा, तथा मुझे हर समय प्रेरणा एवं सहयोग देनेवाले मेरे दोस्त शरद पाटील, संदीप माने, प्रकाश धनवडे, वैशाली पाटील, सुनिल माने, विवेक मोरे, मनोज जाधव, आदि दोस्तों का मैं विशेष आभारी हूँ।

अंत में इस कार्य को सफल एवं संपन्न बनाने में जिन विद्वानों ने एवं स्वजनों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है, उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघुशोध - प्रबंध को विद्वतजनों के संमुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

शोध – छात्र

S.R.Jadhav

(श्री. जाधव सचिन राजाराम)

स्थान :- सातारा

तिथि :- २९/१२/०८